फर्स्ट कॉलम

दीपक शर्मा

माय होम

मानसून खरीदी

बढ़ती होम लोन दरों के बावजूद आप घर लेने की सोच रहे हैं तो इस योजना को मानसून में अंजाम देना बेहतर होगा। ऐसा इसलिए क्योंकि...

- सड़कों व परिवहन व्यवस्था की असल स्थिति मानसून में ही पता चल पाती है। बारिश के दिनों में आप उस स्थान की सड़क व्यवस्था के हालात जान सकते हैं जहां आप मकान खरीदने की योजना बना रहे हैं।
- आप जो मकान ले रहे हैं (चाहे वह नया हो या पुराना), बारिश के दिनों में उसकी क्या स्थिति हो सकती है, इसका अंदाजा भी आपको मानसून में ही हो सकता है। जो मकान आप खरीदने जा रहे हैं, अगर उसकी छत या दीवारें लीक कर रही हैं तो आप मकान मालिक या बिल्डर को उसे ठीक करने को कह सकते हैं। यही नहीं, इस आधार पर उसके साथ मोल-भाव भी कर सकते हैं।
- मानसून के दौरान निर्माण गतिविधियों में एक तरह का ठहराव-सा रहता है। इसलिए ऐसे समय में बिल्डर मकानों की कीमतों में कुछ छूट भी देने को तैयार हो जाते हैं। मानसून के बाद खासकर दशहरा-दीपावली के मौसम में मकानों की कीमतों में अक्सर बढ़ोतरी देखने को मिलती है।

माय इन्श्योरेंस

क्या दस्तावेज पढ़ लिए?

आप स्वास्थ्य बीमा इसलिए करवाते हैं ताकि आड़े वक्त पर आपको कोई दिक्कत नहीं हो, लेकिन क्लेम करते वक्त आपके दावे को ठुकराया जा सकता है। ऐसा इसलिए हो सकता है क्योंकि आपने 'टर्म एंड कंडिशन' पढ़े बगैर ही दस्तावेजों पर दस्तखत कर दिए। दस्तावेजों में छिपी शर्तों को ध्यान से पढ़ेंगे तो हो सकता है कि उसमें ऐसा कोई वाक्य लिखा मिल जाए-'पॉलिसी शुरू होने के 60 या 90 दिन के भीतर कोई क्लेम स्वीकार नहीं किया जाएगा।' इसी प्रकार कई बीमारियों में सर्जरी के खर्च में कुछ चीजें कवर में शामिल नहीं की जातीं, जैसे हार्ट वाल्व रिप्लेसमेंट में इस्तेमाल होने वाले 'बलून' पर खर्च को कई बीमा कंपनियां कवर से बाहर रखती हैं। इसलिए बीमा दस्तावेज पर हस्ताक्षर करने से पहले उन्हें ध्यान से पढ़ना व एजेंट या संबंधित अधिकारी से अपनी शंकाओं का समाधान करना बेहद जरूरी है।

माय मोबाइल

जेम्स 'ब्रांड' मोबाइल

सोनी एरिक्सन ने भारत के बाजारों में भी वह हैंड सेट लांच कर दिया है जिसका इस्तेमाल हाल ही में जेम्स बांड (डेनियल क्रेग) ने 'क्वांटम ऑफ स्पेस' फिल्म में किया था। सी902 साइबर शॉट नामक इस हैंड सेट की प्रमुख विशेषता इसमें दिया गया पांच मेगा पिक्सल का आटो फोकस कैमरा है जिसका इस्तेमाल बांड फिल्म में बार-बार करते हैं। कंपनी ने बांड के नाम को भुनाने के लिए मोबाइल में पहले से ही लोडेड एक स्पाय गेम और फिल्म 'क्वांटम ऑफ स्पेस' के चुनिंदा दृश्य भी दे रखे हैं। 160 एमबी मेमोरी वाले इस मोबाइल की कीमत 20,995 रुपए हैं।

माय बुक

बनें बाजार के खिलाड़ी

'**बाजार** के बड़े खिलाड़ी बनते हैं, पैदा नहीं होते।' बाजार मामलों के विशेषज्ञ जैक बर्नस्टीन की पुस्तक 'मार्केट मास्टर्स' में यही बात उभरकर आती है। इसका नया संस्करण हाल ही में भारतीय बाजारों के लिए जारी हुआ है। इस किताब के माध्यम से बर्नस्टीन ऐसे कई सबक सिखाते हैं जिनसे सामान्य व्यक्ति भी बाजार का माहिर खिलाड़ी बन सकता है। उनका सबसे बड़ा सबक है अपना खेल आप खेलो। यानी बाजार में वही काम करो जिस पर आपको विश्वास है। जल्दी किसी नतीजे की उम्मीद न करें, होमवर्क करें, नुकसान को भी झेलने के लिए तैयार रहें, अनुशासन में रहें इत्यादि कुछ ऐसी टिप्स हैं जिनका पालन करने पर आप बाजार को अपने अनुकूल बना सकते हैं। अमेरिका के कमोडिटीज एजुकेशनल इंस्टीट्यूट ने इसे ट्रेडिंग पुस्तकों में अब तक की श्रेष्ठ पुस्तक करार दिया है। इस 176 पेज की किताब की कीमत 395 रुपए है।

चलती रहे जिंदगी

अरिंदम बोस

सभी वरिष्ठ नागरिकों के लिए विशेष लाभार्थी ट्रस्ट बना लिए जाने चाहिए। इससे न केवल बीमारी जैसी स्थिति में आसानी रहेगी, बल्कि इन ट्रस्टों के माध्यम से वित्त एवं निवेश की योजना को भी बेहतर ढंग से अंजाम दिया जा सकेगा।

सुभाष लखोटिया

यह एक वास्तविक कहानी है। 68 साल की अनिता कुमार हाल तक अपने वयोवृद्ध लेकिन सक्रिय पति, अपने एक पुत्र, बहू और पोते के साथ सुखपूर्वक रह रही थीं। जिंदादिल अनिता की जिंदगी में अचानक कैंसर तूफान खड़ा कर देता है। उनके मस्तिष्क से शुरू हुआ कैंसर शरीर के अन्य हिस्सों में भी फैलने लगा। कैंसर की पहचान होते ही उनका उपचार भी शुरू कर दिया गया। बीमारी बड़ी थी, इसलिए खर्चे भी उसी अनुपात में होने लगे। अनिता के बैंक खाते में पर्याप्त पैसा था। जब बिलों का भुगतान करने का समय आया तो अनिता के पति बियरर चेक लेकर उस पर उनकी पत्नी के दस्तखत करवाने पहुंचे, लेकिन अनिता के हाथ इतने कमजोर हो चुके थे कि वे ठीक ढंग से पेन भी नहीं पकड़ पा रही थीं। म्यूचुअल फंड की यूनिट्स बेचने के लिए स्लिप पर हस्ताक्षर के समय भी यही स्थिति रही। अब पूरा परिवार संकट में था। अनिता के पास पैसा होने के बावजूद उसका इस्तेमाल उनके उपचार में नहीं हो पा रहा था।

अनिता के लिए पहले से ही विशेष लाभार्थी ट्रस्ट (स्पेसिफिक बेनिफिशयरी ट्रस्ट) होता तो उनके परिजनों को ऐसी स्थिति का सामना नहीं करना पड़ता। तब वे उस ट्रस्ट के जरिये पैसा हासिल कर सकते थे। यह कहानी बताती है कि विशेष लाभार्थी ट्रस्ट केवल बच्चों या नाबालिगों के लिए ही नहीं, वरिष्ठ नागरिकों के लिए भी लाभदायक हो सकते हैं।

माय एडवाइज

कैसे बनाएं ट्रस्ट

सबसे पहले तो अपने परिवार में उस व्यक्ति की पहचान करें जिसके लिए ऐसा ट्रस्ट बनाने की जरूरत है। इसके बाद ट्रस्ट डीड बनाकर उसमें सभी अहम बातें लिखी जाएं। अब बारी ट्रस्ट के लिए राशि तय करने की है। बेहतर यही होगा कि शुरुआत में कम पैसों से ट्रस्ट शुरू किया जाए ताकि ट्रस्ट डीड में आपको स्टाम्प ड्यूटी के रूप में कम पैसा चुकाना पड़े। बाद में कभी भी ट्रस्ट में आर्थिक योगदान दिया जा सकता है।

कितने हों ट्रस्टी

ट्रस्टी परिवार से भी हो सकते हैं और गैर रिश्तेदार भी। कम से कम दो ट्रस्टी हो तो बेहतर रहेगा। ट्रस्टियों की अधिकतम संख्या 5 से 7 तक हो सकती है। ट्रस्टियों के नाम बाद में भी जोड़े जा सकते हैं। खुद लाभार्थी को भी ट्रस्टी बनाया जा सकता है। वैसे ट्रस्टी बनाते समय विशेष सावधानी बरतने की जरूरत है। गलत ट्रस्टियों के चयन का मतलब होगा संपत्ति व ट्रस्ट की आय के गलत हाथों में जाना। इसलिए इस बात का ध्यान रखें कि ट्रस्टी परिवार व लाभार्थी के विश्वासप्रिय हों। यदि ट्रस्ट के अधीन धनराशि के प्रबंधन का कार्य बड़ा है और गतिविधियां भी अधिक हैं तो ट्रस्ट डीड में ट्रस्टियों के लिए मेहनताना मुहैया करवाने की बात भी जोड़ी जा सकती है।

ट्रस्ट डीड में हो...

- विशेष लाभार्थी का नाम
- ट्रस्ट का नाम
- ट्रस्ट के गठन का उद्देश्य
- संस्थापक ट्रस्टियों के नाम
- ट्रस्टियों के अधिकार और जिम्मेदारियां
- लाभार्थी के निधन के बाद सम्पत्ति के बंटवारे की योजना
- ट्रस्ट की राशि की निवेश योजना

उपहार मिले तो...

- ऐसा ट्रस्ट किसी रिश्तेदार से नकदी, चेक या ड्राफ्ट के रूप में कितनी भी राशि ले सकता है। ट्रस्ट पर कोई कर दायित्व नहीं आएगा।
- गैर रिश्तेदारों से पूरे वित्त वर्ष में कुल 50 हजार रुपए तक की नकदी, चेक या ड्राफ्ट के रूप में राशि बगैर कर दायित्व के ग्रहण की जा सकती है। इससे ज्यादा राशि होने पर आयकर अधिनियम के तहत टैक्स का भुगतान करना होगा।
- रिश्तेदार या गैर रिश्तेदार से संपत्ति या ज्वेलरी इत्यादि के रूप में कितना भी बड़ा उपहार लिया जा सकता है।
- अगर ट्रस्ट किसी शादीशुदा महिला के लिए बनाया गया है तो उसके पति, ससुर या सास द्वारा उपहार देने पर क्लबिंग का प्रावधान लागू होगा।

लाभार्थी के देहांत होने पर...

वारिसाना मामलों का निपटारा करना भी महत्वपूर्ण है। ट्रस्ट डीड में लाभार्थी की इच्छानुसार इस बात का उल्लेख किया जा सकता है कि उसके निधन के बाद ट्रस्ट की संपत्ति का वितरण किस तरह से किया जाना है। वैसे लाभार्थी चाहें तो ट्रस्ट डीड के बजाय अलग से वसीयतनामा में भी ट्रस्ट की संपत्ति के वितरण के बारे में उल्लेख करवा सकता है।

वित्तीय लेन-देन का प्रबंधन

विशेष लाभार्थी ट्रस्ट के वित्तीय लेन-देन का प्रबंधन उसके ट्रस्टियों द्वारा किया जाता है। लाभार्थी के बीमार होने की स्थिति में भी इस ट्रस्ट के वित्तीय लेन-देन का काम नहीं रुकना चाहिए। इसके लिए ट्रस्ट के नाम एक बैंक खाता भी खुलवाया जा सकता है जिसका संचालन कोई भी ट्रस्टी कर सकता है। इसी प्रकार आयकर रिटर्न पर भी ट्रस्टी हस्ताक्षर कर सकते हैं।

(लेखक जाने-माने कर एवं निवेश विशेषज्ञ हैं)

जन्म : 18 मार्च 1939
देश : अमेरिका
संपति : 1.1 अरब डॉलर
संस्थापक : बरेल कम्युनिकेशन ग्रुप

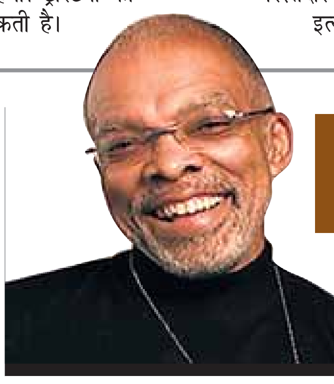

थॉमस बरेल

अगर आप कोशिश नहीं करेंगे तो हार तय है। विफल होने से न घबराएं। आप सकारात्मक रहें। नतीजा आपके पक्ष में ही आएगा।

माय जर्नी टु सक्सेस

थॉमस बरेल के बारे में बहुत से भारतीय शायद नहीं जानते होंगे, लेकिन अमेरिका की विज्ञापन की दुनिया में यह एक जाना-माना नाम है। बरेल केवल इसलिए नहीं याद किए जाते कि उन्होंने विज्ञापन जगत में करोड़ों डॉलर का बिजनेस खड़ा कर दिया, बल्कि उनकी यह सफलता इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि उन्होंने यह उपलब्धि रंगभेद की बाधाओं को तोड़कर हासिल की। आज अश्वेत मूल के बराक ओबामा को अमेरिका का संभावित राष्ट्रपति मानने में भले ही अमेरिकियों को कोई एतराज नहीं होगा, लेकिन 1960-70 के दशक में स्थिति ऐसी नहीं थी। तब अश्वेत बरेल के लिए यह कल्पना करना भी मुश्किल था कि वे श्वेत प्रभुत्व वाले अमेरिका में अपने लिए कोई मुकाम हासिल कर लेंगे।

एक बेहद गरीब परिवार में जन्मे बरेल शुरू से विज्ञापनों की दुनिया में काम करने के इच्छुक थे। उन्होंने शुरुआती तौर पर विज्ञापन कंपनियों में कॉपी राइटिंग का कार्य किया, लेकिन जल्दी ही उनमें मन में अपनी खुद की कंपनी प्रारंभ करने का विचार पनपने लगा। अंततः 1971 में उन्होंने अपनी विज्ञापन कंपनी 'बरेल कम्युनिकेशन ग्रुप' की स्थापना की। तब बरेल केवल 32 साल के थे।

बरेल ने अपनी कंपनी तो बना ली, लेकिन रंगभेद के चलते कंपनियों ने बरेल से विज्ञापन बनवाने में रुचि नहीं दिखाई। इस वजह से उनकी कंपनी छह माह के भीतर ही दिवालियेपन के कगार पर पहुंच गई। लेकिन बरेल हिम्मत हारनों वालों में से नहीं थे। वे अंततः मैकडॉनल्ड्स कंपनी के प्रबंधन को यह समझाने में कामयाब रहे कि अगर कंपनी अश्वेत अमेरिकियों के लिए एक्सक्लूसिवली विज्ञापन दें तो उनकी कमाई बढ़ सकती है। मैकडॉनल्ड्स ने बरेल का यह सुझाव मान लिया और उन्हें विज्ञापन बनाने को अनुबंधित कर लिया। बस, यहीं से उनकी सफलता की यात्रा की शुरुआत हो गई। इसके बाद उन्होंने पीछे मुड़कर नहीं देखा। उनके पास कई नामी कंपनियों के विज्ञापनों की कतार लग गई।

हर निवेशक अपने निवेश को सुरक्षित रखना चाहता है। निवेश सुरक्षित रखने व समय-समय पर रिटर्न हासिल करने के वास्ते अपने पोर्टफोलियो का उचित प्रबंधन करना जरूरी है। इसके लिए अपने पैसे का विभिन्न माध्यमों में इस तरह से संतुलित निवेश करना होगा ताकि हर हालत में जोखिम नियंत्रण में रहें।

नजर न लगे निवेश को

नितاशा जोशी

हर निवेशक की यही दिली तमन्ना होती है - कम से कम जोखिम, अधिक से अधिक रिटर्न। सैद्धांतिक तौर पर ऐसा मुश्किल माना जाता है। आम धारणा यही है कि जितना अधिक जोखिम, उतना अधिक रिटर्न। यानी अधिक पैसा कमाना है तो जोखिम उठाना ही पड़ेगा।

आपके सामने एक सवाल उठ सकता है कि पैसे कमाने के लिए ही निवेश किया जाता है। तो फिर ऐसा क्या किया जाए कि आपके निवेश को ग्रहण भी न लगे और रिटर्न भी मिलता रहे? इसके लिए आपको करना होगा अपने पोर्टफोलियो का सही प्रबंधन। अक्सर निवेशक इसी की उपेक्षा कर देता है जबकि अनेक अध्ययनों में यह बात साबित हो चुकी है कि किसी पोर्टफोलियो का 90 फीसदी प्रदर्शन इस बात पर निर्भर करता है कि उसका प्रबंधन कैसे किया जाता है।

गौतम चक्रवर्ती

पोर्टफोलियो के प्रबंधन का मतलब है निवेश किए जाने वाले पैसे का विभिन्न इंस्ट्रूमेंट्स में आवंटन कितनी सूझ-बूझ के साथ किया जाता है। इसे ही परिसम्पत्ति का आवंटन (असेट अलोकेशन) कहा जाता है। यह आवंटन विभिन्न माध्यमों जैसे इक्विटी (शेयर्स), बांड्स, पोस्ट आफिस बचत, सावधि जमाएं, सोना-चांदी, रियल्टी इत्यादि में निवेश करके किया जाता है। यह आपकी क्षमता व रुचि पर निर्भर करता है कि इनमें से आप कितने माध्यमों में निवेश करते हैं।

माय मैनेजमेंट

साधें संतुलन

निवेश के प्रत्येक तरीके की अपनी-अपनी विशेषताएं हैं। उनके अपने खतरे भी हैं और रिटर्न की संभावनाएं भी। परिसम्पत्तियों का आवंटन इस तरह से किया जाना चाहिए ताकि परिस्थिति चाहे जो हो, आपका पूरा निवेश खतरे में नहीं पड़े। यानी एक माध्यम में नुकसान हो तो दूसरे माध्यम में लाभ कमाकर उसकी भरपाई की जा सके। उदाहरण के लिए महंगाई के दौर में शेयर मार्केट में किया गया निवेश अल्पावधि के लिए नुकसानदायक हो सकता है, लेकिन इन्हीं परिस्थितियों में सोने व संपत्तियों के भाव बढ़ने लगते हैं। ऐसे समय में सोने में किया गया निवेश आपको फायदा पहुंचा सकता है। इस प्रकार आपके पोर्टफोलियो में शेयर्स, सोना और संपत्ति तीनों हों तो विभिन्न परिस्थितियों में ये एक-दूसरे को संतुलित करने का कार्य करते हैं। इससे हो सकता है आपको एकदम 'छप्पड़ फाड़के' जैसा रिटर्न न मिले, लेकिन यह सुनिश्चित हो जाता है कि विषम परिस्थितियों में भी आपका पैसा बचा रहेगा।

कैसे करें प्रबंधन?

अब सवाल यह है कि आप अपना पोर्टफोलियो कैसे तय करें। यह मुख्य रूप से निवेश की अवधि और आपके द्वारा जोखिम को सहन करने की क्षमता पर निर्भर करता है। आपके पास अगर समय है यानी आप दीर्घावधि तक पैसे का निवेश कर सकते हैं तो शेयर या बांड्स कहीं बेहतर हैं। हालांकि शेयरों में जोखिम अधिक है, लेकिन दीर्घावधि में इनमें किया गया निवेश जोखिम को कम कर प्रायः अच्छा रिटर्न देता है। इसीलिए आपके पोर्टफोलियो में शेयर और म्यूचुअल फंड्स की यूनिट्स आवश्यक रूप से रहनी चाहिए। लेकिन केवल यही नहीं हो। साथ ही थोड़ा-सा निवेश सोने में भी किया जाए तो बेहतर रहेगा। विशेषज्ञ सोने में कम से कम पांच फीसदी निवेश करने की वकालत करते हैं।

बैंक के बचत खातों में लंबे समय तक पैसे रखने का मतलब होगा उसकी क्रयशक्ति को कम करते जाना, लेकिन अगर आपको जल्दी ही पैसे की जरूरत पड़ सकती है तो बचत खातों जैसे नकद माध्यमों में निवेश कहीं बेहतर रहेगा। ऐसी स्थिति में आपके पोर्टफोलियो में शेयरों की भरमार से आपका गणित बिगड़ सकता है।

(लेखिका भोपाल में निवेश विश्लेषक हैं।)

ओल्ड इज गोल्ड

म्यूचुअल फंड्स में निवेश करने के इच्छुक निवेशकों के दिमाग में यह सवाल रहता है कि वे एनएफओ में निवेश करें या पहले से मौजूदा स्कीमों में। विशेषज्ञ एनएफओ के बजाय पुरानी स्कीमों में ही निवेश करने को तरजीह देते हैं।

राग वामदत्त

एक म्यूचुअल फंड कंपनी ने 'अ' नामक एनएफओ (न्यू फंड आफर) जारी किया। जैसा कि आमतौर पर होता है, उसकी प्रत्येक यूनिट की फेस वैल्यू 10 रुपए थी। राजेश ने इसे निवेश का काफी सस्ता माध्यम समझकर उसमें 1,500 रुपए का निवेश कर दिया। इस राशि के बदले राजेश को मिली 150 यूनिट्स।

राजेश के उलट गुरुदत्त ने एनएफओ में निवेश करने के बजाय 'ब' नामक एक पुरानी स्कीम में 1,500 रुपए लगाने का फैसला किया। उस दौरान स्कीम की एनएवी 150 रुपए चल रही थी। इस प्रकार सुरेश को मिली महज 10 यूनिट्स।

इस उदाहरण में लग सकता है कि राजेश फायदे में हैं क्योंकि उन्हें 1,500 रुपए में 150 यूनिट्स मिल गईं, जबकि गुरुदत्त को मिली केवल 10 यूनिट्स। सवाल है कि वास्तव में किसे ज्यादा फायदा मिलेगा? मान लेते हैं दोनों फंड समान गति से प्रगति करते हैं और एक साल बाद 'अ' की एनएवी 15 रुपए तथा 'ब' की एनएवी 225 रुपए हो जाती है। ऐसी स्थिति में राजेश के निवेश का मूल्य 2,250 रुपए (150 यूनिट्स गुना 15) हो जाएगा। गुरुदत्त के निवेश का मूल्य भी 2,250 रुपए (10 यूनिट्स गुना 225) ही रहेगा।

यानी इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता है कि आप यूनिट्स सस्ती दरों में खरीदते हैं या महंगी दरों पर। चूंकि दोनों म्यूचुअल फंड कंपनियों ने एक समान दर से प्रगति की, इसलिए दोनों के निवेश का मूल्य भी समान रहा।

गौतम चक्रवर्ती

एनएफओ बेहतर या मौजूदा स्कीम?

उक्त उदाहरण से यह तो साफ हो गया है कि आम धारणा के विपरीत कम कीमत या फेस वैल्यू पर यूनिट्स खरीदने से कोई फायदा नहीं होता है। अब आप एनएफओ में निवेश करें या पहले से ही चल रही म्यूचुअल फंड की स्कीम में? किस म्यूचुअल फंड में किया गया निवेश अधिक रिटर्न देगा, इसे मापने का कोई सीधा-सीधा पैमाना तो नहीं है, लेकिन पिछले ट्रैक रिकार्ड के आधार पर पता लगाया जा सकता है कि अमुक फंड ने कितना रिटर्न दिया है। यह भी देखना जरूरी है कि किसी फंड का किसी साल विशेष में ही बेहतर प्रदर्शन है या उसने हर साल इस प्रदर्शन को कमोबेश बनाए रखा है। यानी फंड के प्रदर्शन को आंकने के लिए कम से कम पांच साल का रिकार्ड देखना उचित रहेगा। अब कोई एनएफओ है तो जाहिर है वह पूरी तरह से नया फंड होगा और नए फंड का ट्रैक रिकार्ड तो होगा नहीं। इसलिए अगर म्यूचुअल फंड में पैसा लगाना है तो एनएफओ के बजाय ऐसे मौजूदा फंड में निवेश करना अधिक बेहतर रहेगा जो पिछले कई सालों से अस्तित्व में है। इससे आपको यह भी पता रहेगा कि फंड का पोर्टफोलियो क्या है।

माय फंड

कब खरीदें एनएफओ की यूनिट्स?

एनएफओ में निवेश करने का जोखिम तब लिया जा सकता है जब वह स्कीम पूरी तरह नई हो, ऐसी स्कीम हो जो मार्केट में मौजूद किसी भी फंड ने इससे पहले पेश नहीं की हो। उदाहरण के लिए विदेशी कंपनियों में निवेश करने वाला फंड। यह बिल्कुल नया फंड था जिसने भारतीयों के सामने निवेश का एक नया रास्ता खोला।

(लेखक न्यूयार्क में बिजनेस एनालिस्ट और वेबसाइट www.RaagVamdatt.com के सलाहकार हैं।)

मुद्दे की बात ...

- एनएफओ में कम कीमत में अधिक यूनिट्स जरूर मिल जाएंगी, लेकिन निवेश राशि के मामले में इसका कोई फायदा नहीं होता।
- जब तक एनएफओ ऐसी कोई स्कीम पेश नहीं करें जो पूरी तरह से नई हो, तब तब उसमें निवेश नहीं करें।
- उन स्कीमों में ही निवेश करें जो पिछले कुछ सालों से अस्तित्व में हैं। ऐसी स्कीमों का ट्रैक रिकार्ड देखा जा सकता है।
- एक या दो साल में अच्छा रिटर्न देने के बजाय लंबे अर्से तक औसत रिटर्न वाले फंड कहीं बेहतर साबित होते हैं।
- कम से कम पांच साल का ट्रैक रिकार्ड देखने के बाद ही निवेश की योजना बनाएं।